मेरा हिरोशिमा

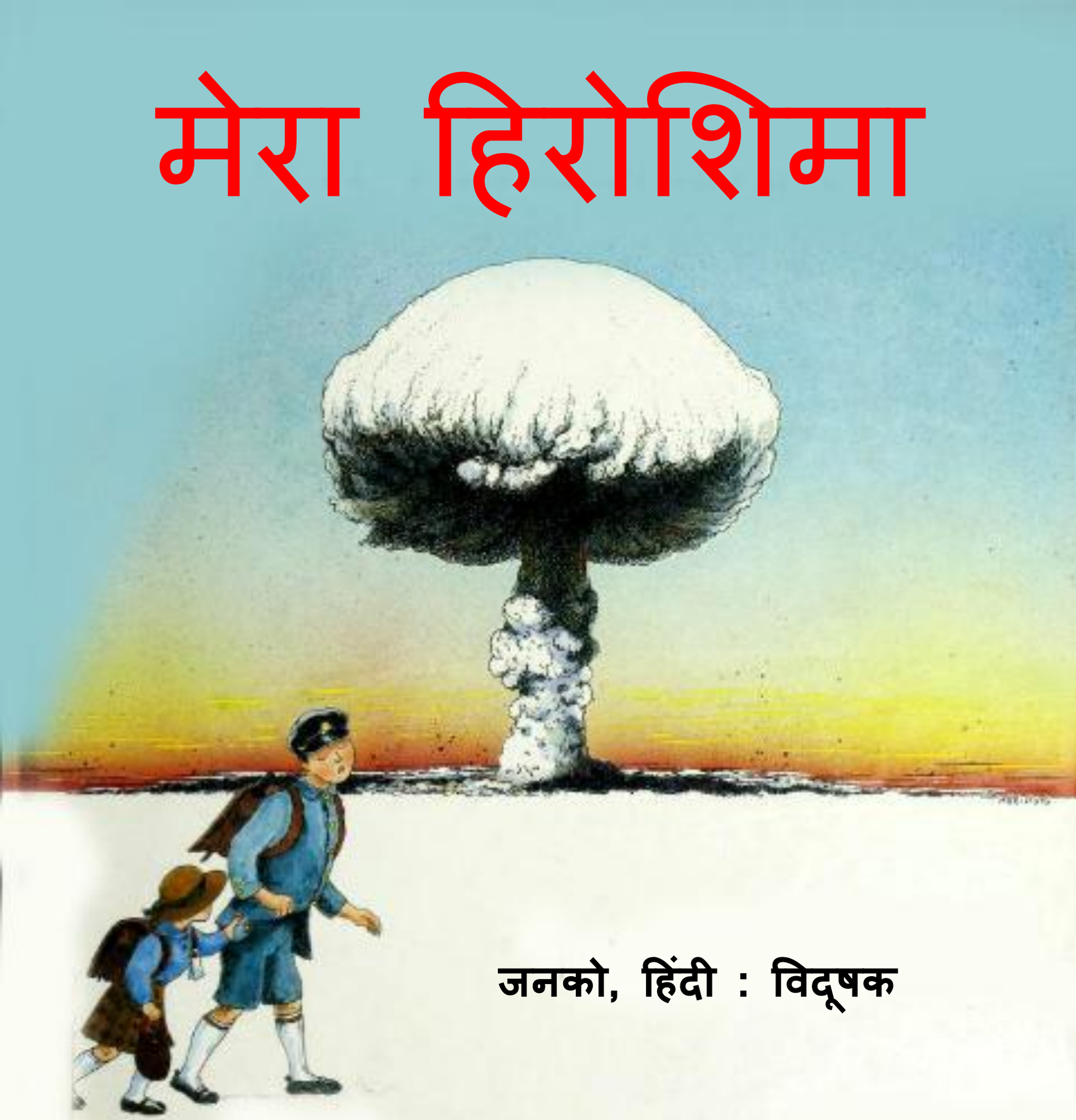

जनको, हिंदी : विदूषक

बहुत से मित्रों की याद को समर्पित

मेरा हिरोशिमा

हिरोशिमा शहर मेरी पुरानी यादों में गहराई से बसा है.
वो तीन तरफ से हरी पहाड़ियों से घिरा है.
उसके एक ओर समुद्र है.
हिरोशिमा शहर में सात नदियाँ बहती हैं.

मैं अपने परिवार में सबसे छोटा था.
घर में मेरे माता-पिता के साथ-साथ
एक बड़ा भाई और दो बड़ी बहनें भी थीं.

कभी-कभी मुझे अकेले रहना अच्छा लगता था.
तब मैं घर पर ही रहकर चित्र बनाता था.
मैं पूरे दिन चित्र बनाता रहता था,
क्योंकि उसमें मुझे सबसे ज्यादा मज़ा आता था.

मेरे कई दोस्त थे.

पर उनमें से सबसे अच्छे दोस्त फुमी और हरुको थे.

हम साथ मिलकर बहुत से खेल खेलते थे.

पर हमारा सबसे प्रिय खेल था “संतरे और नींबू”.

गर्मियों के दिनों में
रात को आतिशबाजी
छोड़ी जाती थीं. अपने
परिवार के साथ मुझे
आतिशबाजी के सुन्दर
रंगों और नमूनों को
देखने में बहुत मज़ा
आता था.
जब हम लोग पुल पर
खड़े होकर उन्हें
निहारते थे तो
आतिशबाजी बहुत ऊपर
और विशाल नज़र
आती थीं.

मुझे स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था.
पर मुझे हर रोज़ अपने भाई की जैकेट
पकड़कर उसके पीछे-पीछे स्कूल जाना होता था.

मेरे टीचर काले रंग के भारी फ्रेम का चश्मा पहनते थे.

जब वो हमें चित्रकारी सिखाते थे, तब वे मुझे बहुत अच्छे लगते थे.

जब मैं स्कूल में चौथी कक्षा में था तब एक बड़ा महायुद्ध शुरू हो गया.

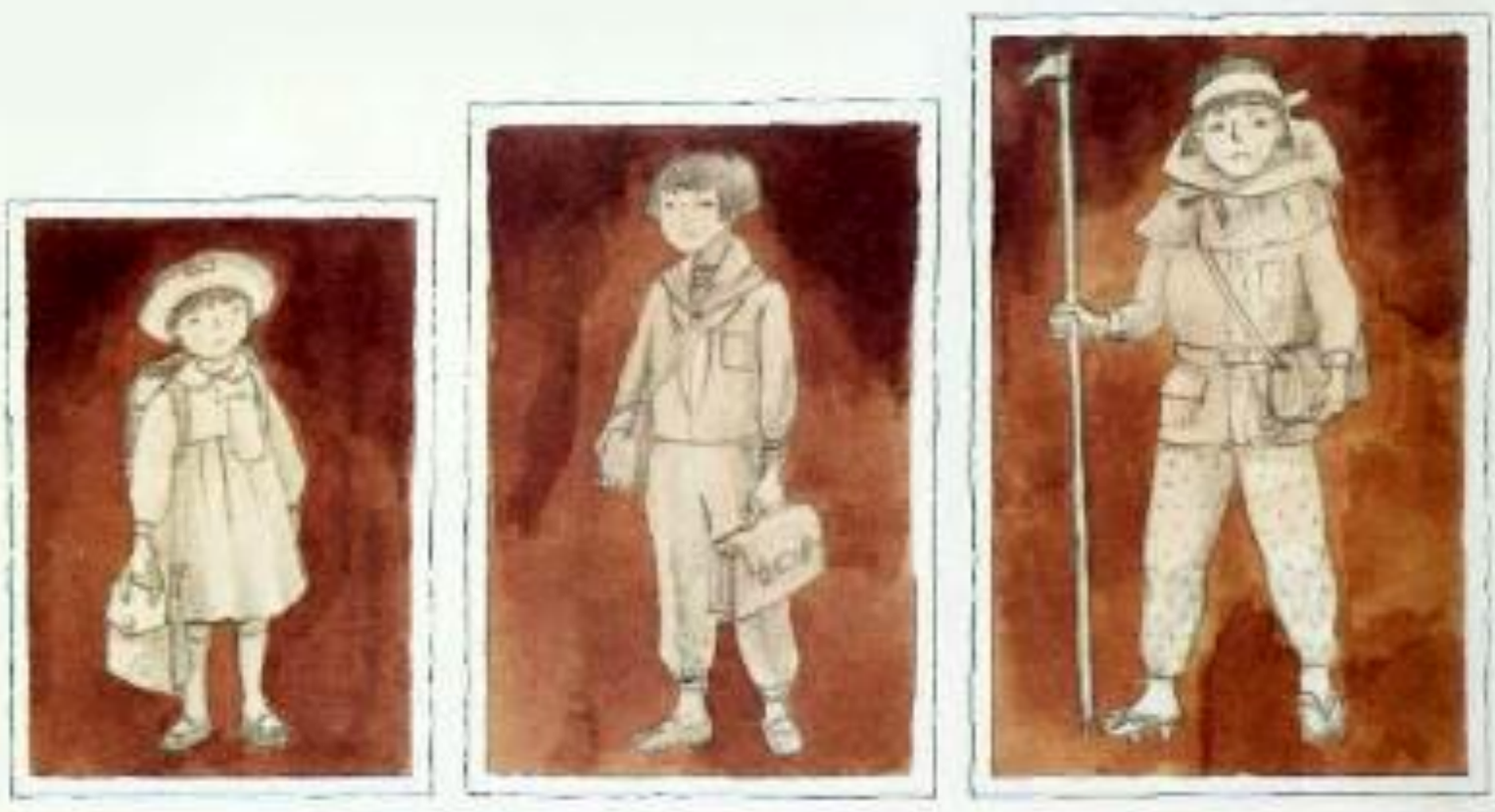

जब मैं बड़ा हो रहा था तब मेरे आसपास के हालात बहुत तेज़ी से बदल रहे थे. हाई-स्कूल में पहुंचते-पहुँचते मुझे विशेष प्रकार के कपड़े पहनने पड़े क्योंकि युद्ध से हमारा पूरा देश बुरी तरह प्रभावित हुआ था.

अब दुकानों में सामान बहुत कम हो गया था.
और सभी लोगों को गर्मियों की छुट्टियों में फ़ौजी
ट्रेनिंग पड़ती थी.

8.15 सुबह, 6 अगस्त, 1945

हिरोशिमा में लोगों ने सुबह उठकर अपनी दिनचर्या शुरू ही की थी. तभी साईरन का भोंपू बहुत ज़ोर से बजने लगा. उसने लोगों को दुश्मन के हवाई जहाज़ के आने की चेतावनी दी. पर कुछ देर बाद साईरन बजना बंद हो गया. उसके बाद लोग दुबारा अपने-अपने कामों में व्यस्त हो गए.

उस दिन मेरा पेट दुःख रहा था इसलिए मैं स्कूल नहीं गया था.

मैं बहन के साथ कमरे में बातें कर रहा था.

मुझे लगा जैसे मुझे किसी हवाई जहाज़ की आवाज़ सुनाई दी हो. पर वो हवाई जहाज़ बहुत दूर था और आसमान में बहुत ऊंचाई पर था.

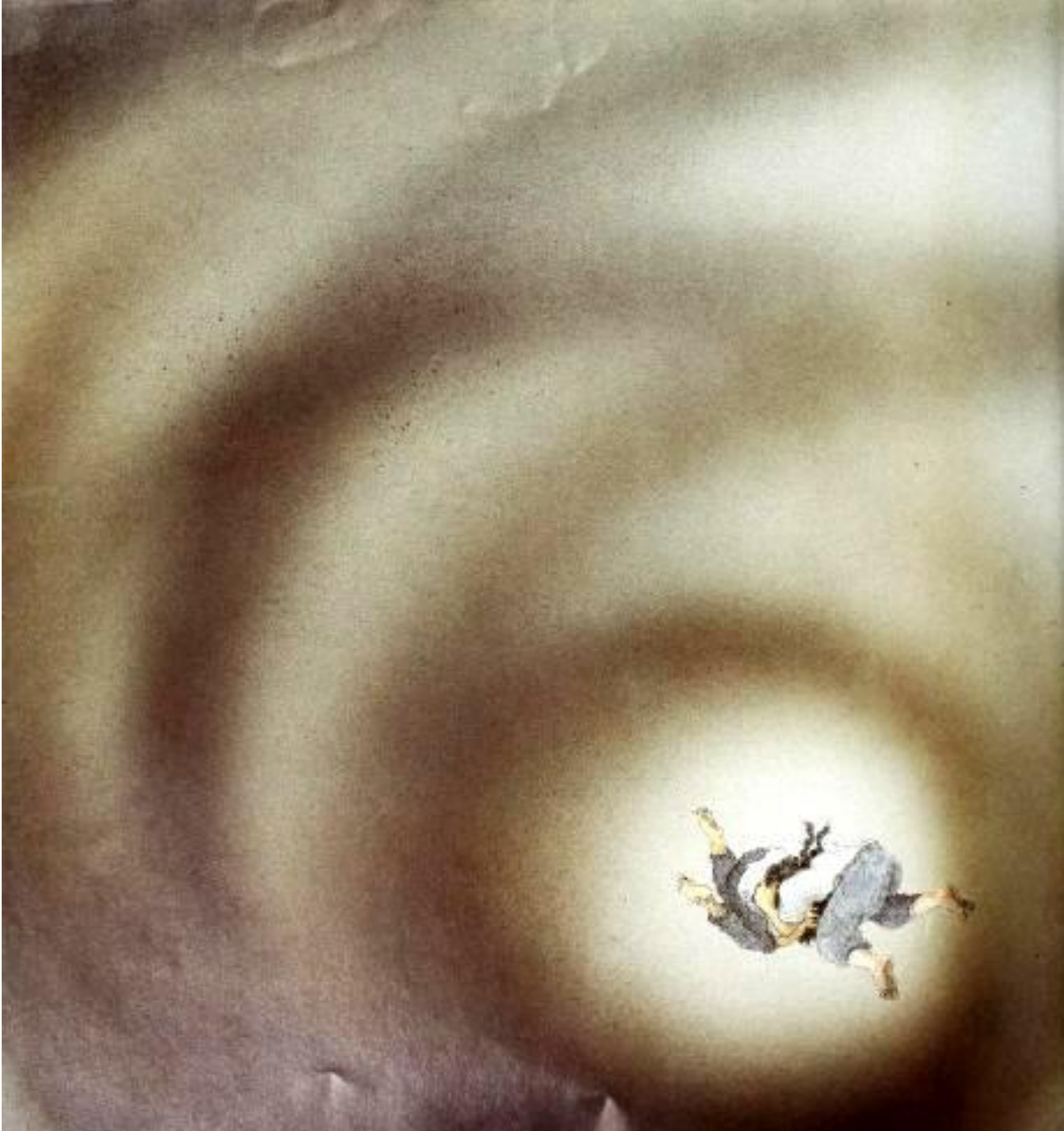

तभी एक चमकीली बिजली मुझसे आकर टकराई, और आवाज़ का एक तेज़ धमाका हुआ.

मेरी आँखें जलने लगीं – मेरे चारों ओर अँधेरा छा गया. मैं अपनी बहन को पकड़े रहा.

अब मुझे आसपास हर चीज़ धुंधली दिखने लगी. मुझे लगा जैसे मैं मर रहा हूँ.

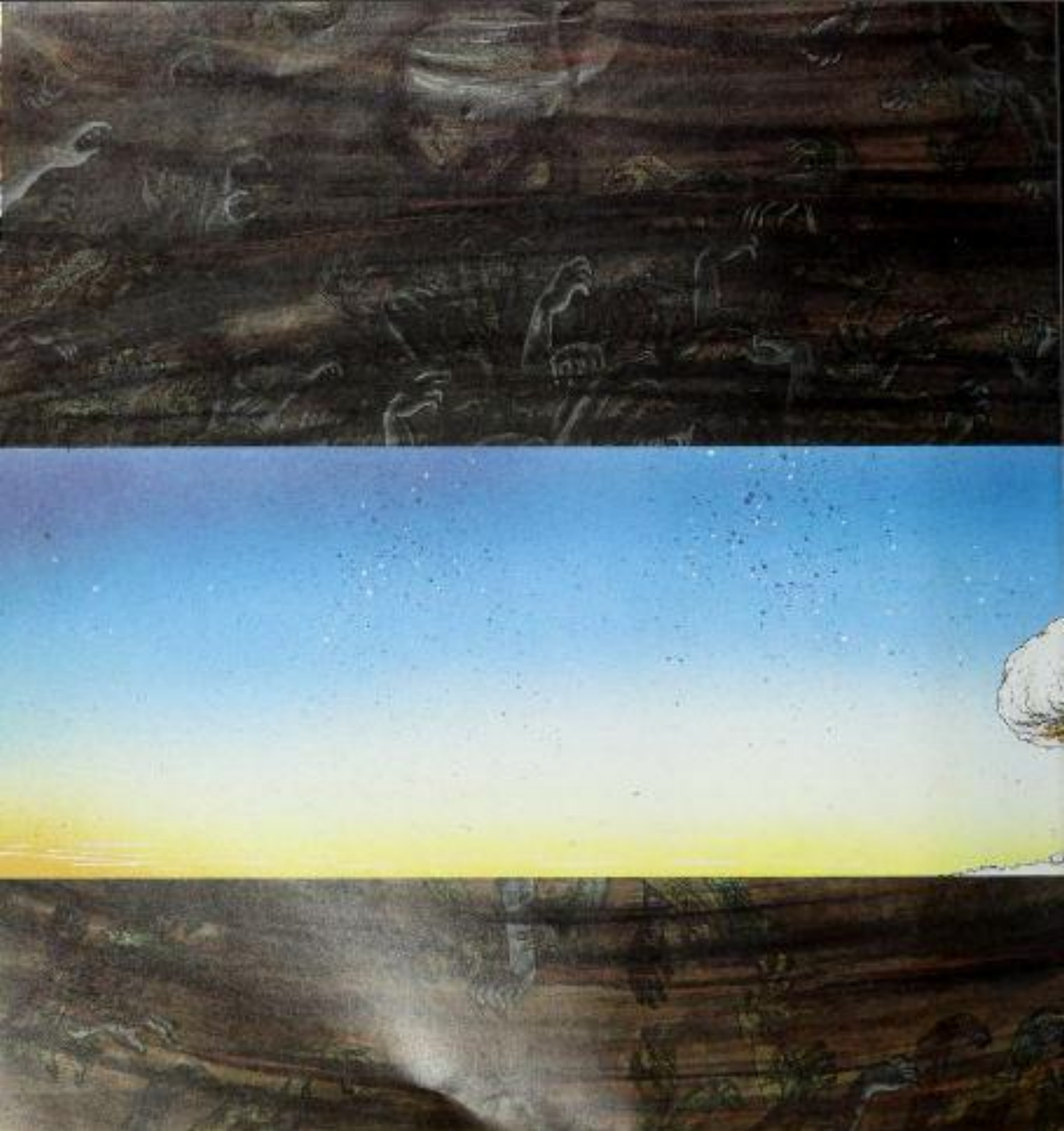

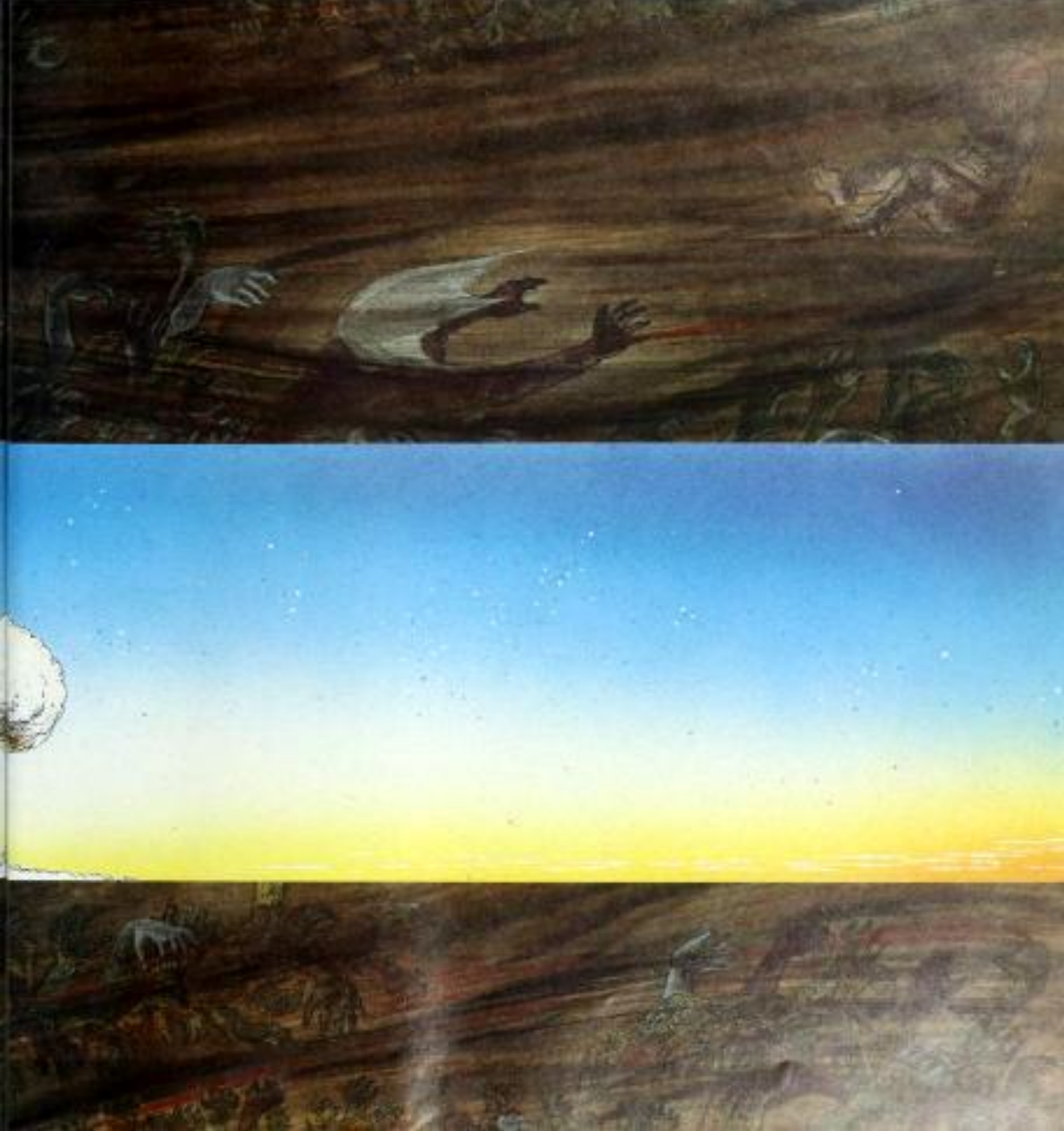

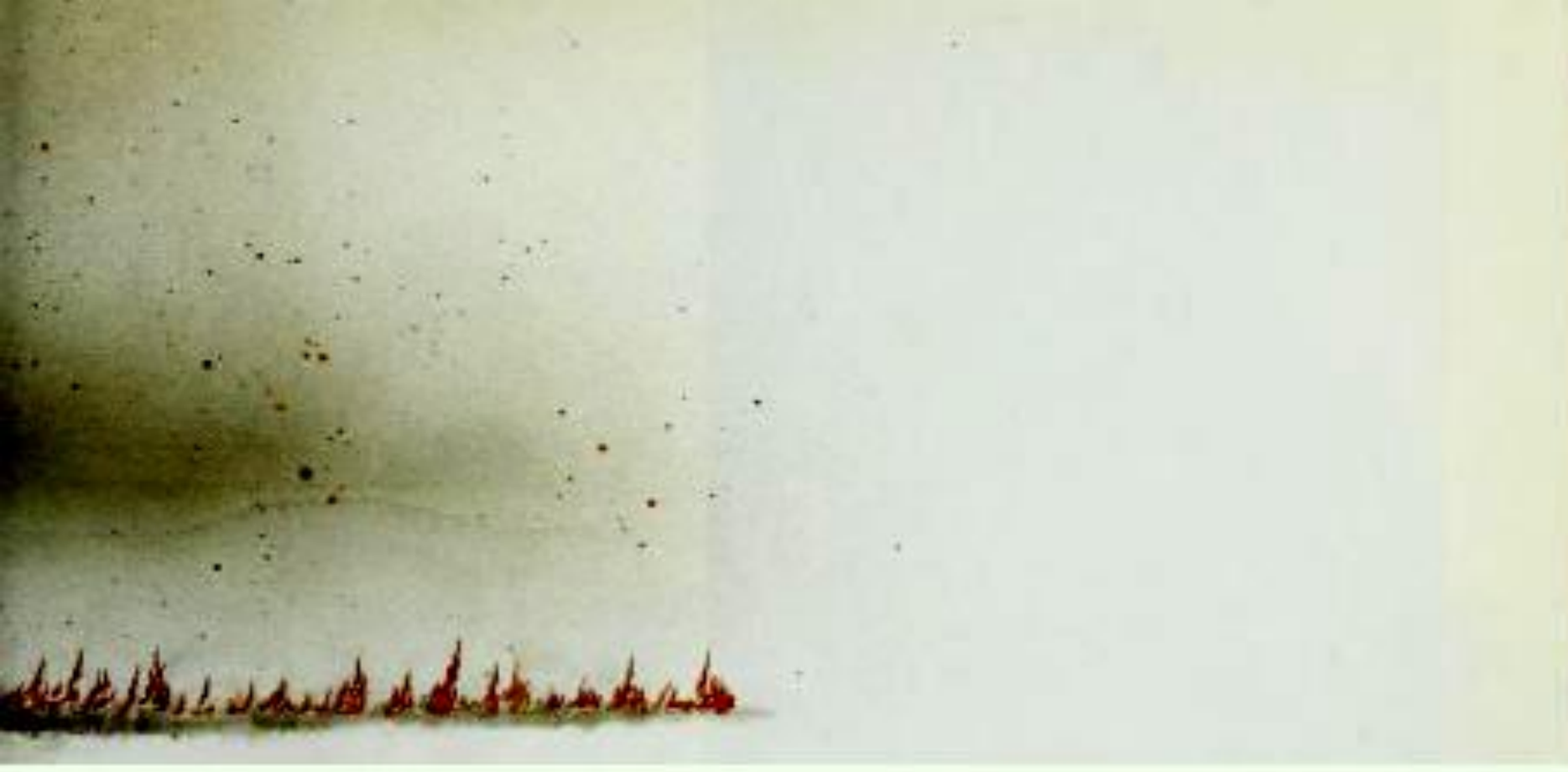

कुछ देर बाद मेरी आँख खुली. मैं अभी भी जिंदा था.
पर हमारा घर पूरी तरह से तबाह हो चुका था.

जब मैं रेंगते हुए घर के बाहर आया तब मैंने देखा कि पूरा हिरोशिमा तबाह हो चुका था. हर चीज़ तेज़ तूफ़ान में उड़ रही थी और उनके टुकड़े-टुकड़े हो चुके थे. जगह-जगह आग सुलग रही थी.

नदियों के किनारों पर लोगों की भीड़ जमा थी.
हर कोई नदी के पास जाना चाहता था.

एक बच्चा ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था और अपनी मृत माँ को जगाने की कोशिश कर रहा था.

मैं बहुत खुशनसीब था कि मेरा पूरा परिवार जिंदा था और हम सब लोग एक गुफा में छिपे थे.

पिताजी का चेहरा बुरी तरह जलकर सूज गया था. मेरे भाई की पीठ में कांच के टुकड़े घुस गए थे क्योंकि वो खिड़की के नीचे बैठा था. मेरी सबसे बड़ी बहन चॉपस्टिक से खा रही थी इसलिए उसके दांत ओठों से बाहर निकल आए थे.

हमने जलते हुए हिरोशिमा में से सैकड़ों
लोगों को पलायन करते हुए देखा.
उस समय गर्मी का मौसम था और सूरज
भी आकाश में तप रहा था.

ज़ख़्मी लोगों का इलाज करने लिए हरेक स्कूल एक अस्पताल में तब्दील हो चुका था. मैंने लोगों को दर्द से रोते और कराहते हुए सुना. उनके शरीर से जली चमड़ी की गंध आ रही थी.

बहुत से लोग एक के बाद एक करके मरे.
उनके मृत शरीरों को स्कूल के खेल के
मैदान में ले जाकर जलाया गया.

कुछ दिनों बाद खबर आई
कि युद्ध समाप्त हो गया था.

फिर छह महीने बीते.

जो छात्र जिंदा बचे थे वे वापिस अपने स्कूलों में गए. जली ज़मीन में से मैंने एल्युमीनियम का एक खाने का टिफ़िन बॉक्स खींचकर निकाला. उसमें जला हुआ काला चावल था. मुझे अपने कई मित्रों की हड्डियाँ भी मिलीं.

अब बहुत साल बीत चुके हैं और मैं वापिस अपने स्कूल जाने लगा हूँ.

यह एक चमत्कार ही है, कि मैं जिंदा बच निकला.

अब मुझे साफ़ मैदान दिखते हैं और शांत छात्र दिखते हैं.

वे बिल्कुल वैसे ही हैं जैसे मैं कुछ सालों पहले था.

हिरोशिमा के बारे में कुछ तथ्य और जानकारी

अगस्त 6, 1945 को सुबह 8.35 को एटम-बम्ब हिरोशिमा शहर पर गिराया गया. यह पहला मौका था जब किसी भी युद्ध में एटम-बम्ब का इस्तेमाल हुआ था.

- 70,000 लोग तुरंत मर गए
- 70,000 लोग, 1945 के अंत तक मारे गए
- 1990 तक मरने वालों की संख्या 2-लाख से अधिक हो गयी थी
- लोग आज भी एटम-बम्ब की बीमारी से मर रहे हैं
- यह आंकड़े हिरोशिमा शहर ने संयुक्त राष्ट्र संघ के सामने पेश किये हैं.

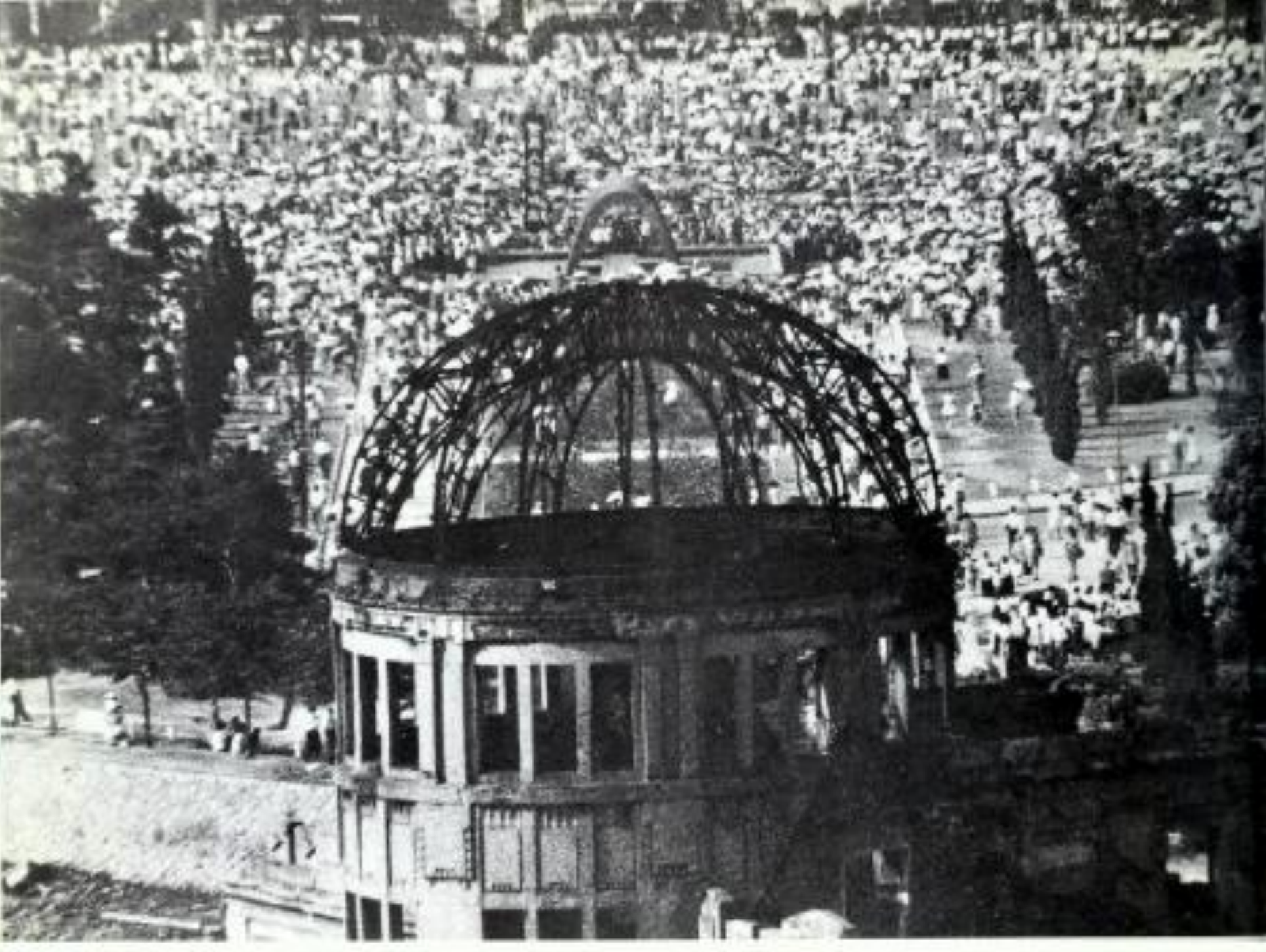

सभी मृत आत्माओं को यहाँ पर शांति से रहने दो.

हम इस पाप को फिर दुबारा कभी नहीं दोहराएंगे.